ज्योतिर्मय आंखें

(1:17-19क)

कुछ हज़्ते पहले, मैंने टीवी पर चमगादड़ों पर एक कार्यक्रम देखा था। चमगादड़ वैसे नहीं ''देखते'' जैसे इनसान देखते हैं। कमरे में बैठकर हम तो दीवारें कुर्सियां, मेज़, किताबें और लोगों को देख सकते हैं। परन्तु उसी कमरे में यदि कोई चमगादड़ उड़ रहा हो तो वह प्रकाश की किरणों को देखकर नहीं बल्कि ध्वनि के स्वर को सुनकर कमरे को ''देखेगा।'' चमगादड़ मूलत: अंधे होते हैं। अपने आस पास के संसार के बारे में चमगादड़ों और आदमी का अलग-अलग दृष्टिकोण रहता है।

जब जीवन के प्रति धारणा की बात होती है तो, मसीही लोगों का गैर मसीहियों से बिल्कुल ही अलग दृष्टिकोण होता है। 1:17-19क में पौलुस ने इस बात को स्वीकार किया। वह एक मूर्तिपूजक नगर में मसीही लोगों के एक समूह को लिख रहा था। ये मसीही लोग *एकलेसिया* का भाग थे। *एकलेसिया* ''कलीसिया'' या चर्च के लिए नये नियम का यूनानी शज़्द है। इसका अर्थ ''सभा, इकट्ठ, मण्डली'' है। पौलुस ने कलीसिया या चर्च को कभी भी ईंट-पत्थरों की इमारत के रूप में नहीं देखा। चर्च या एकलेसिया उद्धार पाए हुए और मसीह द्वारा बदले गए लोगों से मिलकर बनती है। *एकलेसिया* के सदस्यों के जीवन को देखने का ढंग अविश्वासियों के ढंग से बिल्कुल ही अलग होता है। यह बात पौलुस की प्रार्थना से पता चलती है:

> [मेरी प्रार्थना है] कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुज़्हें अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे। और तुज़्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है, और पवित्र लोगों में उस की मीरास की महिमा का धन कैसा है। और उस की सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, (1:17-19क)।

मसीही लोगों का गैर-मसीहियों से अलग होना जीवन को देखने के ढंग में अन्तर के कारण है। वास्तव में, *हमारी ज्योतिर्मय आंखें जीवन को इस तरह देखती हैं, जिसकी संसार कल्पना नहीं कर सकता। एकलेसिया* ऐसा ज़्या देख सकती है, जिसे संसार नहीं देख सकता?

अपनी ज्योतिर्मय आंखों से हम परमेश्वर को देखने और जानने के योग्य होते हैं

ज़्या कोई व्यक्ति, जो मसीही नहीं है परमेश्वर को ऐसे जानता है जैसे एक मसीही व्यक्ति परमेश्वर को जानता है ? बाइबल उन लोगों के सीमित ज्ञान के बारे में बताती है जो मसीह के नहीं हैं। ''उस अज्ञानता के कारण जो उन में है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं'' (4:18)। गैर मसीही लोग परमेश्वर को वैसे ही नहीं देख पाते, जैसे उस कमरे में बैठे आप उसमें रखी चीज़ों को देख सकते हैं परन्तु चमगादड़ नहीं देख सकता, वैसे ही गैर मसीही लोग मसीही लोगों की तरह परमेश्वर को देख या जान नहीं सकते। *एकलेसिया* के बाहर को जीवन एक तरफा मार्ग माना जाता है। *एकलेसिया* के अन्दर को जीवन दूसरा मार्ग माना जाता है।

पौलुस ने परमेश्वर से मसीही लोगों को कुछ बहुत विशेष अर्थात ''अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश की आत्मा'' (1:17ख) देने के लिए प्रार्थना की। उसने उस प्रभाव के साथ-साथ जो मसीह ने अपने लोगों पर डाला है, ''केवल-मसीही'' जैसी अन्तर्दृष्टि चाही जो परमेश्वर ने मसीह में किया है।

फील्ड ऑफ़ ड्रीज़्स नामक फिल्म रे किंसेला नाम के पात्र पर केन्द्रित है, जिसने एक खेत में बेसबॉल का मैदान बनाया। मैदान बन जाने पर, बेसबॉल के पुराने खिलाड़ी आकर फिर से उसके मैदान में खेलने लगे। काफी समय तक रे, उसकी पत्नी और उसकी बेटी ही उन खिलाड़ियों को देख सकते थे। वे खिलाड़ी दूसरे लोगों के लिए अदृश्य थे, ज़्योंकि उन्हें विश्वास नहीं होता था। कहानी में, रे के साले को लगा कि उसका दिमाग खराब हो गया है ज़्योंकि रे को वे लोग दिखाई दे रहे हैं परन्तु उसे नहीं दिखते।

मसीही लोगों के साथ भी कुछ ऐसा ही होता है। हमारे आस पास ऐसे लोग हैं जिन्हें वह परमेश्वर दिखाई नहीं देता, जो मसीही लोगों को देखने की क्षमता देता है। मसीह के बाहर के उन लोगों को रोज़ की ज़रूरतें अर्थात मकान, कपड़े, फैशन, स्कूल और छुट्टियों में कहीं जाने की जगह ही दिखाई देती है। वे यह मान लेते हैं कि यही चीज़ें वास्तविकता का सार हैं। वे केवल दिखाई देने वाली, अर्थात भौतिक वस्तुएं ही दिखाई देती हैं।

इफिसियों 1 अध्याय में पौलुस ने एक बिल्कुल ही अलग वास्तविकता या आयाम की बात की। यह वास्तविकता हमारी शारीरिक आंखों के लिए अदृश्य रहती है, परन्तु है यह भौतिक संसार की तरह ही एक वास्तविकता। *एकलेसिया* के सदस्यों के रूप में, हम उन्हीं चीज़ों को मान सकते हैं जिनके बारे में पौलुस लिख रहा था।

हर मसीही को दिया गया पवित्र आत्मा हमें उन चीज़ों को, जो परमेश्वर ने यीशु में की हैं और जिसके परिणामस्वरूप हमारे जीवनों में सदा के लिए परिवर्तन आता है, वास्तविकता के रूप में देखने में सहायता करता है। हम अनुग्रह, क्षमा, छुटकारे, आत्मिक मीरास और हमारी आत्माओं में परमेश्वर के आत्मा के वास को देखने और समझने लगते हैं। *एकलेसिया* के बाहर किसी को ये बातें वास्तविक नहीं लगतीं।

परमेश्वर *एकलेसिया* को उन बातों को समझने की योग्यता ज़्यों देता है, जिन्हें दूसरे

लोग नहीं समझ सकते ? परमेश्वर चाहता है कि हम उसे व्यज़्तिगत रूप से जान लें। पौलुस ने कहा, ''कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुज़्हें *अपनी* पहचान में, *ज्ञान* और प्रकाश की आत्मा दे'' (1:17)।

परमेश्वर चाहता है कि आप उसे जानें। परमेश्वर को जानने के लिए जिस शज़्द का पौलुस ने इस्तेमाल किया उसका परमेश्वर के साथ बाहरी जान पहचान के विपरीत, पूरी तरह, गहराई से और व्यज़्तिगत ज्ञान होने के लिए इस्तेमाल किया। ऐसा ज्ञान भागीदारी और अनुभव से ही आता है। यह किसी को उसके बारे में कुछ तथ्य या विस्तार से जानने के बजाय उससे व्यज़्तिगत आधार पर जानने पर बल देता है।

केवल मसीही लोग ही परमेश्वर को व्यज़्तिगत तौर पर पा सकते हैं। इसलिए किसी मण्डली के लिए सच्ची *एकलेसिया* होना बहुत ही निर्णायक है। परमेश्वर किसी स्थानीय कलीसिया को समाज के दूसरे संगठनों जैसा नहीं बनने देना चाहता। *एकलेसिया* इकट्ठे होने या कोई कार्यक्रम करने से कहीं अधिक है। इसका महत्व किसी स्थान से, जो बाइबल ज़्लासों और आराधना सभाओं के लिए नियुज़्त किया गया है, कहीं बढ़कर है। सच्ची *एकलेसिया* वही है, जहां मसीही लोगों को परमेश्वर को जानने का अवसर मिलता है।

स्थानीय कलीसिया के प्रत्येक सदस्य का प्रभु को जानने के लिए आने के लिए दूसरे सदस्यों की सहायता करने में अद्वितीय योगदान है। परमेश्वर का ज्ञान तब होता है जब मसीही लोग ऐसे लोगों के रूप में, जिनमें परमेश्वर का आत्मा रहता है, एक दूसरे से मिलते हैं। यह तब होता है जब हम एक दूसरे के साथ प्रभु के ज्ञान को बांटते हैं। जब हम नये नियम की ''एक दूसरे'' की आज्ञाओं[1] की परिस्थितियों को निजी तौर पर व्यावहारिक रूप में काम में लाते हैं।

यदि आपको इस पाठ की कोई बात याद न हो, तो कृपया यह याद रखें: एकलेसिया *(मसीही लोगों के एक दूसरे के साथ मिलते रहने वाली जमायत) सचमुच परमेश्वर को जानने के लिए सुन्दर मंच तैयार करती है।*

हर मण्डली में कलीसिया के अगुओं को चाहिए कि मसीही लोगों को दूसरे मसीहियों से मेल जोल रखने, संगति करने और व्यज़्तिगत परिस्थितियों में सेवा करने के लिए प्रोत्साहित करें। *एकलेसिया* अपने प्रारज़्भिक दिनों में ऐसा ही करती थी, और आज उसके लिए परमेश्वर की यही इच्छा है।

अपनी ज्योतिर्मय आंखों से हम अदृश्य वास्तविकताओं को देखने के योग्य होते हैं

पौलुस ने तीन अदृश्य वास्तविकताओं, आशा, मीरास और सामर्थ का उल्लेख किया:

> और तुज़्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है और पवित्र लोगों में उस की मीरास की महिमा का धन कैसा है। और उस की सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, (1:18, 19क)।

मसीही लोगों के रूप में हमारी आशा को शारीरिक आंखों से नहीं देखा जा सकता। हमारी आशा केवल मन की आंखों से ही दिखाई देती है। केवल मसीही लोग ही इसे मानते हैं। यीशु के पास आने से पहले हमें यह आशा नहीं थी। ''तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे'' (2:12)।

''आशा ... जो ... स्वर्ग में रखी हुई'' है केवल मसीही लोगों को ही है (कुलुस्सियों 1:5)। ''...यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, ... जीवित आशा'' (1 पतरस 1:3ख) केवल मसीही लोगों को ही है। मसीही लोगों के रूप में हमारी आशा केवल मनभावनी इच्छा ही नहीं है। हमारी आशा जीवन के विषय में सकारात्मक व्यवहार से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। यह जीवित प्रभु की वास्तविकता पर केन्द्रित है जो प्रतिज्ञाएं करता है कि उसका जीवन हमारा जीवन बन जाएगा और हम उसके साथ अनन्त निवास में रहेंगे। केवल ज्योतिर्मय आंखें ही ऐसी आशा को देख सकती हैं।

इसके अलावा, केवल मसीही लोगों की ज्योतिर्मय आंखें ही *एकलेसिया* को परमेश्वर की अपनी मीरास के रूप में देख सकती हैं। पौलुस ने मसीही लोगों के लिए प्रार्थना की ताकि वे ''पवित्र लोगों में उसकी महिमा का धन'' के महत्व को समझ पाएं। परमेश्वर की सामर्थ पर विचार करें। इस पृथ्वी की सारी सुन्दरता पर ध्यान दें। इसमें पाए जाने वाले सारे धन की गणना करें। सूर्य, चांद और तारों की महिमा पर ध्यान दें। विशाल संसार की आकाश गंगाओं वाले आकाश पर ध्यान दें। यदि यह सारी सृष्टि परमेश्वर के सामने रखी जाए और स्वयं परमेश्वर से उसके महान धन के बारे में पूछा जाए? परमेश्वर की सबसे महत्वपूर्ण सज़्पज़ि ज़्या है?

पौलुस चाहता था कि मसीही लोगों को समझ आ जाए कि सृजे गए इस संसार के सारे धन में से, परमेश्वर अपनी सबसे अधिक पुरस्कृत सज़्पज़ि के रूप में *एकलेसिया* को ही चुनेगा! संसार कलीसिया को वैसे नहीं देखता जैसे परमेश्वर देखता है। बहुत से मसीही लोग भी कलीसिया को उतना महत्व नहीं देते जितना परमेश्वर देता है।

ज्योतिर्मय आंखें कलीसिया को अलग दृष्टि से देखती हैं। यह परमेश्वर की मीरास, परमेश्वर का भण्डार और परमेश्वर की पुरस्कृत सज़्पज़ि है। कलीसिया के होने पर हम भी यही सब कुछ होते हैं। हम *एकलेसिया* के भाग हैं, जो युगों से ऐसे लोग बनाने के लिए परमेश्वर की योजना है, जिन्हें वह अपना कह सकता है।

पवित्र शास्त्र के हमारे इस भाग में एक और दिखाई देने वाली वास्तविकता का उल्लेख है जिसे सामर्थ कहते हैं। पौलुस ने ''उसकी सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं'' के बारे में लिखा। उसने *एकलेसिया* के लिए सुसमाचार के द्वारा उपलज़्ध सामर्थ पर ध्यान दिलाने के लिए कई शज़्दों का इस्तेमाल किया। ''सामर्थ'' के लिए चार विभिन्न शज़्द आयत 19 में मिलते हैं।[2] उसने इस सच्चाई पर कि मसीह में हमें सबसे अधिक सज़्भावित सामर्थ मिलती है, ज़ोर देने के लिए एक के ऊपर एक शज़्दों के अज़्बार लगा दिए। उस सामर्थ का जो अपनी महानता से ऊपर है, इकट्ठा होने का बड़ा महत्व है।

इस सामर्थ को केवल मसीही लोग ही देख सकते हैं। वास्तव में, कई बार, गैर मसीहियों को परमेश्वर के कामों में निर्बलता के अलावा कुछ और दिखाई ही नहीं देता। याद रखें कि क्रूस के नीचे अधिकतर लोगों को दिखाई नहीं दिया था कि परमेश्वर मनुष्य के उद्धार का कार्य कर रहा है। उन्हें लगा था कि वे किसी भ्रमित आदमी की मृत्यु की पराजय और असफलता के साक्षी हैं जिसे लगता था कि वह मसीहा है।

इसके विपरीत, परमेश्वर के लिए खुली आंखों ने क्रूस को उद्धार करने वाली पूर्ण सामर्थ में देखा। यह परमेश्वर के बयान से बाहर अर्थात दूसरे संसार की सामर्थ की गवाही देता है। यह वह सामर्थ है जो उस पर विश्वास करने वाले सब लोगों के लिए अनन्त जीवन में कब्र से फूट निकलती है।

सारांश

अविश्वासी संसार देख नहीं सकता कि मसीही लोग *एकलेसिया* में ज़्या देखने के लिए आते हैं। परमेश्वर हमें ज्योतिर्मय आंखें देता है। हम संसार को अलग दृष्टि से देख सकते हैं और हमें देखना भी चाहिए। परन्तु चौकस रहें: यदि आपके जीवन में आपकी मण्डली और इसके लोग सुविधा की दुकान की तरह हैं तो आपको ज्योतिर्मय आंखें या आशा या सामर्थ नहीं मिलेगी। यदि आप केवल सप्ताह में एक बार जाकर, चर्च बिल्डिंग में उपस्थिति दर्ज कराकर, कुछ देर बैठकर बिना किसी से मिले और विशेष रूप से किसी से अर्थात दूसरे मसीही लोगों से आत्मिक सज़्पर्क बनाए, चले जाते हैं तो आपको वह सामर्थ दिखाई नहीं देगी। परमेश्वर को आप उसके लोगों से अलग करके जान या देख नहीं सकते।

इस पर स्थानीय कलीसिया को काम करने में सहायता दें। अपने अगुओं की सहायता करें और उन्हें मण्डली को नये नियम की आज्ञाओं से मेल खाती ''एक दूसरे'' से और अधिक सज़्पूर्णता और सिद्धता के साथ गंभीरता से ध्यान देने में प्रोत्साहन दें। तब, और केवल तभी मण्डली को ज्योतिर्मय आंखों की आशीष का अनुभव होगा।

टिप्पणियां

[1]इन आज्ञाओं में ''एक दूसरे से प्रेम रखो'' (यूहन्ना 13:34); ''भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर मया रखो'' (रोमियों 12:10); ''जैसा मसीह ने भी ... तुज़्हें ग्रहण किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को ग्रहण करो'' (रोमियों 15:7); ''एक दूसरे के भार उठाओ'' (गलतियों 6:2); ''एक दूसरे की उन्नति के कारण बनो'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:11); ''जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे... एक दूसरे की सेवा में लगाए'' (1 पतरस 4:10) और कई दूसरी आज्ञाएं शामिल हैं। [2]पहला तो *dunamis* (''सामर्थ'') है, जो स्वाभाविक क्षमता के रूप में सामर्थ है। दूसरा *energeia* (''काम करना'') है, जो सब प्रकार के विरोध पर काबू पाने वाली सामर्थ है। तीसरा *kratos* (''शज़्ति''), जो किसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए भरपूरी से सामर्थ देना है। चौथा *ischus* (''शज़्ति'') है जिसे शज़्ति और क्षमता माना जाता है।